भक्त हृदय के उद्‌गार

नटवर मोरे साँवरिया,
मैं तो हो गई बाँवरिया।

जन्म जन्म से भटकी हूँ,
आ सुध तो लो मोरे साँवरिया।।

गीत न जानूँ लय न जानूँ,
राग कोई आता नहीं।

यह न कहना व्यथित हृदय पिया,
तेरे लिये तड़पाता नहीं।।

हर पल बैठी सुन हे राम मैं,
राम राम कहूँ राम राम।

और कछु न जानूँ राम,
हर पल कहूँ मैं राम राम।।

मेरी व्यथा सुन सुन के राम मेरे,
तू भी तो घबरायेगा।

इक दिन ऐसा आयेगा,
तेरा हृदय भर जायेगा।।

- परम पूज्य माँ
प्रार्थना शास्त्र 1/228
27.12.1959

अनुक्रमणिका

1. **भक्त हृदय के उद्‌गार..**
   नटवर मोरे साँवरिया..

3. **सतगुरु का प्राकट्य**
   डॉ. जे.के. महता

7. **ज्ञान जीवन में बह ही जायेगा, यदि आपकी राहों में आपका ही मन न आये!**
   अर्पणा प्रकाशन - श्रीमद्भगवद्गीता - 'भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' 3/7-10

13. **हृदयाकाश का वासी वह, हृदय गुहा ही धाम है..!**
    मुण्डकोपनिषद्, द्वितीय मुण्डक 2/7

17. **आपके आशीर्वाद बिन, मैं बिलकुल अधूरी हूँ!**
    श्रीमती पम्मी महता

22. **निष्काम प्रेम का प्रभाव**
    श्रीमती सत्या महता

24. **अवतार कौन**
    परम पूज्य माँ से पिताजी के प्रश्नोत्तर

29. **पायो जी मैंने राम रत्न धन पायो!**
    श्रीमती पम्मी महता

32. **श्याम भैय्या को राखी**
    प्रस्तुति - विष्णु प्रिया महता

36. **अर्पणा समाचार पत्र**

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनीबद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल,
132 037, हरियाणा भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल 132 037 01, हरियाणा द्वारा अगस्त 2024 को प्रकाशित

सतगुरु का प्राकट्य

डॉ. जे. के. महता

(यह लेख डॉ. जे.के. महता द्वारा अर्पणा पुष्पांजलि जून 2002 के अंक में दिया था)

9 मार्च 1958 को जब पूज्य माँ ने बिन जाने पहचाने मेरे जीवन में प्रवेश किया, तो मैं नहीं जानता था कि भगवान की अतीव अहैतुकी कृपा से, सहज ही मेरे सतगुरु ने मेरे जीवन में प्रवेश किया है।

जाने माने आत्मवान, स्वरूप स्थित, ब्रह्मलीन, जिन्हें संसार पहचान चुका है, ऐसे महात्माओं को तो ऊँचे आसन पर बैठा हुआ देख, मन ही मन उन से दूरी महसूस करता हुआ, मैं अब तक जीता आया था। अपने आप को एक साधारण जीव समझ कर केवल उन का आशीर्वाद ही चाहता रहा और प्राप्त करता रहा। दिनचर्या में पूजा पाठ, मन्दिर जाना, सत्संगों में महात्माओं के शब्दों का श्रवण, एक प्रथा के रूप में आदत सी बन गई थी। इस का मुझे गुमान बहुत था कि मैं एक धार्मिक प्रवृत्ति वाला जीव हूँ.. और अन्य लोगों से अपने आप को श्रेष्ठ समझता रहा।

शास्त्रों के अध्ययन और संतों के वचनों के श्रवण से, एक आत्मवान, ब्रह्मस्थित, ब्रह्मलीन की जो तुला मैं अपनी बुद्धि में बनाये बैठा था, उस के आधार पर मैं पूज्य माँ को लगातार पाँच वर्ष तक तोलता रहा और पाँच वर्ष के बाद मैंने उन्हें परम पुरुष पुरुषोत्तम, परब्रह्म परमेश्वर, भगवान का अवतार घोषित किया। मेरी बात सुन कर वह मेरी अज्ञानता पर मुसकुरा दिये।

अपनी मान्यता के राही पूज्य माँ को यह मान कर जो मैं उस पल समझा था, उस से तो मेरा गुमान और उन पर अधिकार ही बढ़ा, मैं उन के चरणों की धूल बन कर चरणों में न चढ़ सका। मैं तो उनसे अपनी चाहना की पूर्ति, जग की स्थापति, दुःख संकट से निवृत्ति ही चाहता रहा और पाता रहा।

इस प्रकार 33 वर्ष निरन्तर उन के दिव्य प्रेम में सुख की ओर बढ़ता हुआ, मैं महसूस करने लगा कि मैं स्वर्ग में बैठा हूँ। इस दौरान पूज्य माँ ने मुझे शास्त्र कथित निष्काम कर्म के पथ पर चलने का बहुत अभ्यास करवाया, जो जीने का सच्चा ढंग है, परन्तु मैं इस में साथ साथ बढ़ रहे अपने अहंकार को न देख सका। इसे पावनकर आरम्भिक अभ्यास न मान कर इस में ही रमण करने लगा। नाम का पथ तो इस के बाद आरम्भ होता है, पर मेरी ऐसी कोई माँग न थी।

भक्तों की कहानियाँ मैं बहुत पढ़ता था। बहुत तपस्या के बाद भगवान प्रकट होकर भक्त से वर माँगने को कहते.. जो उस ने माँगा, भगवान ने दे दिया और कई बार भगवान के आँसू बह जाते कि वह भक्त भगवान को भी माँग सकता था, परन्तु भगवान को न माँग कर उसने संसार माँग लिया। मैं यह कहानियाँ पढ़ कर भक्तों की इस मूर्खता पर हँसा करता था, पर इसकी मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि मैं भी तो उन में से एक हूँ।

पूज्य माँ तो मुझे श्रेष्ठ कर आज तक मेरी चाकरी कर रहे हैं। उन के रूप में चाकर को पा कर मैं तो धन्य हो गया। सदा मेरी ही बढ़ती चाहते हुए, वह मुझे जग में स्थापित कर के स्वर्ग में बिठाते जा रह हैं।

पूज्य माँ हमेशा कहते हैं कि 'सुखी ही साधना कर सकता है।' दुःख में तो सब भगवान का नाम लेते हैं पर सुखी होने पर वह सुख में रमण करते हैं और भगवान को भूल जाते हैं।

पूज्य माँ के सम्पर्क में आने से पहले संसार में धन, वैभव, मान, प्रतिष्ठा तो मुझे बहुत मिली, परन्तु मैं अपने आन्तर में सुख चैन और शान्ति नहीं पा रहा था, उनका अभाव सा बना रहता था। उन

के सम्पर्क में आने के बाद, जब हम 1965 में मधुबन आये.. डॉ, होने के नाते यहाँ ग्रामीण भाई बहिनों की निष्काम भाव से सेवा का अवसर बहुत मिला। स्वयं, यज्ञमय कर्म की प्रतिमा पूज्य माँ दूसरों के तदरूप हो कर उनकी सेवा करते, जहाँ उन्हें अपनी याद ही न आती।

मुझे उनके सेवा के इस सुन्दर ढंग को देखने का निरन्तर मौका मिलता रहा। मेरा सेवा करने का यह ढंग नहीं था। मैं तो नारायण बन कर दरिद्रों की सेवा करता था। पूज्य माँ को मैंने दरिद्रों में नारायण की पूजा रूप सेवा करते देखा।

मेरा भी मन इस दिव्य सुन्दरता के प्रति बहुत आकर्षित हो गया। पूज्य माँ की इन सेवाओं में उनका एक अंग बनके सेवा करने का बहुत अवसर मिला। परिणाम स्वरूप धीरे धीरे जैसे जैसे इन्सानियत के गुण आते गये, मैं सुखी होता गया। प्रश्नोत्तर के रूप में पूज्य माँ साथ-साथ शास्त्रों के राज़ खोलते गये और जीवन राही सेवा का अभ्यास करवाते रहे।

आश्रम में जितने लोग पूज्य माँ की शरण में आये, माँ ने उन सब को निष्काम कर्म द्वारा कर्त्तव्य पालन के पथ पर लगाया। जो जो कमी हम में होती, उसे बड़े प्रेम से मेहनत करते हुए हमें मना मना कर वह उसे दूर कर देते हैं। इस प्रकार जैसे जैसे शास्त्र कथित इन्सानियत के गुण जीव में आते जाते हैं, उतना उतना वह सुखी होता जाता है। आज अर्पणा की कर्म प्रणाली में जुटे हुए आश्रम के जितने भी सदस्य हैं, वह महा सुखी हैं और प्रेम से सबकी सेवा करते हैं।

परम पूज्य माँ का तो कहीं संग नहीं है, कोई अहं का भाव नहीं है और किसी पर वह अपना अधिकार नहीं समझते। वह तो राम के चाकर हैं। वह कहते हैं,

' उस को भेजा राम ने, मुझे राम ही मिल गया।'

मैं राम का चाकर हूँ, जो मिला मुझे मिल गया।
अपमान मिला मिल गया, ठुकराव मिला मिल गया।।

राम ने भेजा आपको, मुझे साथ तुम्हारा मिल गया।
प्यार मिला मिल गया, भिड़ाव मिला मिल गया।।

मैंने तन दिया राम को, मिला राम को जो मिल गया।
दूर से मैं भी देखे हूँ, क्या कब कैसे मिल गया।।

हानि, लाभ, निंदा, मान, राम को सब मिल गया।
सेवक आपके भये राम, मुझे राम ही मिल गया।।

- परम पूज्य माँ
नृत्य नाटिका - भगवान वाल्मीकि

इस भाव से ही वह सबकी सेवा करते हैं। उन्हें तो यह याद भी नहीं रहता कि कल किसके लिये क्या किया था। यह हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य है कि हमें परम में खोए हुए पूज्य माँ के जीवन राही भगवान के नाम के प्रवाह का यह दिव्य दर्शन मिल रहा है।

उन्होंने किसी को भगवान का नाम देकर अपने साथ बाँधा नहीं। भिन्न भिन्न समय पर भिन्न भिन्न लोग अपनी कोई माँग लेकर उन के पास आए.. दुःखी इन्सानों के दुःख जब दूर हो गये और वह सुखी हो गये तो वह आश्रम छोड़ कर चले गये। कुछ अन्य लोगों को पूज्य माँ की कर्मप्रणाली और आन्तर के गुण बहुत मन भावन लगे, तो वह आश्रम में ही टिके रहे।

पूज्य माँ ने उन्हें निष्काम कर्म के पथ पर लगाया और वह इन्सानियत के गुण उपार्जित करते हुए सुखी हो गए। इस समय नित्य विस्तार को पा रही अर्पणा की यज्ञमय कर्म प्रणाली में यह लोग जुटे हुये हैं। पूज्य माँ को अपना पथ प्रदर्शक मानते हुए, सत्य प्रियता के अभिलाषी यह लोग, उनके शरणापन्न हैं और इसे अपना सौभाग्य मानते हैं।

पूज्य माँ का जीवन, ओम् के चारों पादों का प्रमाण, हमारे सामने है। माण्डूक्य उपनिषद् की सजीव, सप्राण प्रतिमा पूज्य माँ स्वयं हैं। उनका जीवन ही तीनों स्तरों पर नाम का प्रकाश है जो हम सब को सूर्य के प्रकाश की तरह सम् भाव से प्राप्त है। हम चाहें तो इसे आन्तर में धारण कर सकते हैं।

यही सतगुरु को धारण करना है जो जन्म जन्म हमें इस नाम के पथ पर ले जायेगा। इस आन्तर सतगुरु के प्रकाश के सामने वृत्तिमल रूपा-अज्ञान का आवरण उभर कर सामने आता है और मिटता जाता है। ❖

ज्ञान जीवन में बह ही जायेगा,
यदि आपकी राहों में आपका ही मन न आये!

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 3/7

अब भगवान निष्काम कर्मयोगी के विषय में बताते हैं और कहते हैं :

शब्दार्थ :

1. **परन्तु हे अर्जुन! जो मन से इन्द्रियों को वश में करके,**
2. **आसक्ति रहित हुआ,**
3. **कर्मेन्द्रियों से कर्मयोग का आचरण करता है,**
4. **वह श्रेष्ठ है।**

तत्व विस्तार :

नन्हीं! अब भगवान कहते हैं कि कर्मेन्द्रियों से जो कर्मयोग का आचरण करता है, वह श्रेष्ठ है। किन्तु, उसका कर्म, मन से इन्द्रियों को वश में करके अनासक्त भाव से होना चाहिये।

पहले समझ कि 'मन से इन्द्रियों को वश में करके अनासक्त भाव' का क्या अर्थ है? नन्हीं!

1. जब मन पर भी बुद्धि का राज्य होगा, तब इन्द्रियों पर भी बुद्धि का अधिकार होगा।
2. तब इन्द्रियाँ बुद्धि के वश में होंगी।
3. तब इन्द्रियाँ उपभोग के लिये मन को साथ लेकर विषयों में नहीं जायेंगी।

अब देखना यह है कि बुद्धि क्या चाह रही है?

क) बुद्धि आत्मा से योग के यत्न कर रही है?

ख) बुद्धि तनत्व भाव को त्यागने का यत्न कर रही है?

ग) वह अपने तन से नाता तथा संग तोड़ने के यत्न कर रही है? उसे तो अपने तन से वही कर्म करवाने हैं, जिनसे उनका योग सफल हो जाये।

1. ऐसी बुद्धि के अधीन हुए इन्द्रियाँ, विषय आसक्ति रहित ही होती है।
2. ऐसी बुद्धि के अधीन हुआ मन, विषयासक्ति रहित ही होता है।
3. क्योंकि ऐसा जीव अपना तन दुनिया को देने चला है, उसे अपने लिये सुख नहीं चाहिये, इसलिये उसके सम्पूर्ण कर्म निष्काम ही होंगे।
4. वह तो तनत्व भाव अभाव का अभ्यास कर रहा है।
5. वह तो आत्मा से योग करने का अभ्यास कर रहा है।
6. वह तो आत्मा से योग करने के लिये तन से नाता तोड़ने का अभ्यास कर रहा है। उसे अपने तन की स्थापति, मान तथा संरक्षण के लिये कुछ नहीं करना होता। वह तो अपने तन से अपनापन भुलाना चाहता है। ऐसे की कर्मेन्द्रियाँ योग अर्थ ही कर्म करती हैं।

क) उसका तनत्व भाव अभाव का अभ्यास भी इसी में निहित है।

ख) उसकी साधना का सार भी तो इसी में निहित है।

ग) ऐसे की स्थिति के दर्शन भी इन्हीं कर्मों से हो सकते हैं।

घ) ऐसे निष्काम कर्म योगी का प्रमाण भी इन्हीं कर्मों में निहित होता है।

ङ) ऐसे निष्काम कर्म करने के पश्चात् ही उसमें विभिन्न सत् पूर्ण दैवी गुण उत्पन्न होते हैं।

च) जब दैवी गुण आपके आन्तर में बहने लगते हैं, तब आपको उन गुणों का अनुभव होता है।

शनैः शनैः जीवन यज्ञमय हो जाता है और आपकी बुद्धि स्थिर होने लगती है, फिर आप एक दिन अपने आपको भूल ही जाते हैं, या यूँ कहो, तन से तदरूपता छोड़ कर, आत्मवान बन जाते हैं।

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 3/8

अब भगवान अर्जुन से कहते हैं कि:

शब्दार्थ :

1. **तू नियत कर्म कर!**
2. **क्योंकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है**
3. **और कर्म न करने से तो तेरी शरीर यात्रा भी सिद्ध नहीं होगी।**

तत्व विस्तार :

क) शास्त्र विहित कर्म करो, यह अति आवश्यक है।

ख) आत्मवान बनने के लिये वह कर्म करो जो योग के वर्धक हैं।

ग) मोह त्यागने के लिये कर्म करो और अपना तन औरों को दे दो।

घ) समत्व पाने के लिये कर्म करो, तब ही जय पराजय के प्रति निरपेक्षता का भाव होगा।

ङ) योग स्थिति के लिये कर्म करो। बिना अपना तन दिये योग सफल नहीं हो सकता।

च) भक्ति भी महा कर्म ही होता है। भगवान को साक्षी बना कर भागवत् कर्म करो।

छ) गर तेरी जगह भगवान होते, जो वह करते तुम वही करो।

ज) सत् स्थिति कर्म राही होती है, जीवन में सद्गुण का अभ्यास करो।

झ) स्वरूप कर्म में ही निहित होता है।

आत्मवान का जीवन ही प्रमाण है। इस कारण, कर्म न करने से कर्म करना बहुत श्रेष्ठ है। फिर तनो यात्रा भी कर्मों के बिना नहीं हो सकती। कर्म तो करने ही होंगे।

1. सत्मय कर्म करो या असत्मय, कर्म तो करने ही हैं।
2. जीवन में जीना ही होगा, तुम सत् में जीने के यत्न करो।
3. निष्काम भाव से जीना सीखो।
4. संग, मोह त्याग कर जियो।
5. परम में चित्त धर कर जियो।
6. सत् परायण होकर जियो।

देख नन्हीं! अब भगवान ने स्पष्ट ही कह दिया कि अकर्म से कर्म श्रेष्ठ हैं; किन्तु ये कर्म बुद्धि के अधीन होने चाहियें। भावना से कर्तव्य श्रेष्ठ है। बैठे बैठे बातें बनाने से स्थिति नहीं हो जाती। जो भी ज्ञान आपकी बुद्धि समझी है, उसे आप ही के जीवन में सप्राण होना है। आपको स्वयं ज्ञान की प्रतिमा बनना है। आपको ज्ञान के हर वाक् को अपने जीवन में धरना ही होगा; वरना ज्ञान निस्तेज तथा निष्प्राण रह जायेगा। गर आपने उसमें जीवन का रस नहीं भरा तो वह शुष्क रह जायेगा।

ज्ञान और जीवन का संयोग ज़रूरी है। ज्ञान और कर्म की एकरूपता ज़रूरी है। ज्ञान जीवन में बह ही जायेगा, यदि आपकी राहों में आपका ही मन न आये। तब आप स्थितप्रज्ञ, आत्मवान बन ही जायेंगे।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 3/9

अब भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

1. यज्ञ अर्थ किये हुए कर्मों के सिवाय,
2. अन्य सम्पूर्ण कर्म इस लोक में कर्म बन्धन हैं, इसलिये,
3. हे अर्जुन! आसक्ति से रहित हुआ,
4. तप अर्थ तथा यज्ञ अर्थ,
5. भली प्रकार से कर्म कर।

तत्व विस्तार :

यज्ञ अर्थ कर्म क्या हैं :

1. पावनता के लिये जो कर्म किये जायें।
2. परम परायण होकर जो कर्म भागवद् अर्थ किये जायें।
3. भक्ति सम्बन्धी काज, जो भगवान के साक्षित्व में किये जायें।
4. परम परायण जीव के कर्म।
5. जीवन में संग, चाह, मम, मोह से मुक्त करने वाले कर्म।
6. जीवन में दैवी सम्पद् बहाने वाले कर्म।
7. दूजे के लिये जीवन दान देने का कर्म।
8. जीवन में राम के गुणों का अभ्यास।
9. अहंकार की आहुति देने वाले कर्म।
10. सीस झुकाने तथा पल पल मिटते जाने का अभ्यास।

अपने को भूल जाना यज्ञ ही है; भागवत् निमित्त कार्य करना यज्ञ ही है। अन्य सम्पूर्ण कर्म तो कर्म बन्धन ही होते हैं।

क) अहं स्थापना अर्थ जो भी करो, वह कर्म बन्धन ही होते हैं।

ख) मोह तृष्णा द्वारा प्रेरित जो कर्म हों, वे बन्धन कारक ही होते हैं।

ग) चाहना और संग बधित कर्म, बन्धन कारक ही होते हैं।

घ) राग द्वेष से प्रभावित कर्म, बन्धन कारक ही होते हैं।

ङ) निहित प्रवृत्ति, संग रूप कर्म, बन्धन कारक ही होते हैं।

च) आसक्ति पूर्ण जो भी कर्म हों, वे बन्धन कारक होते हैं।

छ) तनो संगी का हर कर्म बन्धन कारक ही होता है।

इसलिये भगवान कहते हैं: हे साधक! हे अर्जुन! आसक्ति छोड़ो और परम के निमित्त कर्म करो। परम स्थापति जीवन में हो, बस यही चाहना मन में धर कर तुम धर्ममय आचरण करो। केवल आत्मवान बनने के लिये कर्म करो। बाकी सब कर्म बन्धन कारक हैं।

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 3/10

अब भगवान ब्रह्म के रचनात्मक रूप, प्रजापति के बारे में यही वचन कहते हैं:

शब्दार्थ :

१. प्रजापति ने कल्प के आदि में
२. यज्ञ सहित प्रजा को रच कर कहा
३. 'इस यज्ञ से तुम वृद्धि पाओ; (और)
४. यह यज्ञ तुम्हारी अभीष्ट कामनाओं को पूर्ण करने वाला हो।'

तत्व विस्तार :

नन्हीं! पहले प्रजापति को समझ लो :

1. प्रजापति सृष्टि के अधिष्ठाता अंश को कहते हैं।
2. प्रजापति ब्रह्म का ही एक विशेषण है।
3. पूर्ण सृष्टि के रचयिता को प्रजापति कहते हैं।
4. सर्वाधार और नियमन करने वाले को प्रजापति कहते हैं।

5. प्रजापति चर अचर तथा जड़ चेतन को जन्म देने वाले देवता को कहते हैं।
6. यह पूर्ण सृष्टि प्रजापति का राज्य मानी जाती है।
7. कहते हैं कि उत्पत्ति, स्थिति और सृष्टि का लय प्रजापति के हाथों में है।
8. पूर्ण विश्व का पोषण और संरक्षण करने वाले प्रजापति है।
9. प्रजापति सृष्टि के नियमन कर्ता तथा जग के कानून रचयिता माने जाते हैं।
10. प्रजापति के रचे हुए कानूनों पर जो चलें, वह नित्य आनन्द में रहते हैं।
11. पूर्ण सृष्टि के संचालक और सुख दुःख का आधार भी प्रजापति है।
12. वह प्रेरक ही प्रेरणा देते हैं जीवन में विभिन्न काज करने की।
13. ईषण कर्ता वह ही हैं। वह ही संचालित करते हैं पूर्ण सृष्टि को।
14. अनुमन्ता कर्म स्वीकृति देते हैं, तब ही जग कायम रहता है।

भगवान कहते हैं, उस प्रजापति ने जग रचा, यज्ञ सहित जग को रच कर कहा 'फलो फूलो और बढ़ो! इस यज्ञ राही तुम सुख पाओ; वांछित चाहना पा करके समृद्धिवान् तुम हो जाओ।'

1. सृष्टि रचना जब रची, यज्ञ भी उत्पन्न कर दिया।
2. इक दूजे पर मानो, सब को ही आश्रित कर दिया।
3. हर वस्तु, हर जीव को लेने वाला भी और देने वाला भी बना दिया।

प्रजापति तो केवल देते ही हैं, वह जीव से कुछ नहीं लेते। पंच तत्व पूर्ण सृष्टि रचते हैं, पर वह कुछ भी तो नहीं माँगते जीव से, इसे फिर से समझ!

1. सूर्य जग को रोशन करता है और उसकी दी हुई ऊष्णता में सब पलते हैं। सब के नयन की ज्योति सूर्य बनता है, पर वह अपने लिये कुछ नहीं चाहता।
2. वायु के बिना प्राण नहीं रह सकते, वायु के बिना वाक् नहीं बह सकते, वायु के बिना श्रवण नहीं हो सकता, पर वायु किसी से कुछ नहीं माँगती।
3. धरती से जग रूप धरता है और पूर्ण सृष्टि इस पर खड़ी है। धरती अन्नदायिनी है

और सबको पुष्टित करती है। प्राण रहित के प्राण ले लेती है और अपने में समा लेती है। उसे जग नित्य कुचलता है पर वह मौन रहती है और बदले में इन्सान से कुछ नहीं माँगती।

क) इसी विधि सब प्राकृतिक तत्व केवल देते ही रहते हैं।

ख) प्रतिरूप में बिन कुछ माँगे वे यज्ञ ही करते रहते हैं।

ग) महामौन है वह परम तत्व।

घ) महामौन, यज्ञ स्वरूप, ब्रह्म स्वभाव को कहते हैं।

ङ) वह केवल देते हैं, सबको पुष्टित करते हैं, अपने लिये वह कुछ नहीं चाहते।

च) मौन स्वरूप, यज्ञ स्वरूप इस कारण वह कहलाते हैं।

छ) पूर्ण संसार रच करके वह अपनी ही सुन्दर रचना से संग नहीं करते, इस कारण निर्विकार कहलाते हैं।

ज) अपनी ही कृति, निज आश्रित रचना को भी 'मेरा' नहीं कहते। इस कारण वह निर्मम हैं। इस कारण ही उनका स्वरूप नित्य शुद्ध कहलाता है।

झ) अपनी प्रकृति के गुण वह समान रूप से सबको देते हैं और गर कोई उन पर प्रहार करे तो वह मौन रहते हैं।

दैवी गुण स्वरूप, परम स्वरूप करुणापूर्ण इस कारण ही वह कहलाते हैं। उनका स्वभाव अध्यात्म है, उनका कर्म रूप यह ज्ञान है। दिव्य अलौकिक यह विश्वपति ही तो ब्रह्म है।

यही तो उस ब्रह्म का कार्य व रूप है। पूर्ण सृष्टि रूपा क्षेत्र में उनका कर्म होता है, किन्तु कर्तृत्व भाव कहीं है ही नहीं। यही उनका यज्ञ है, यही तो अध्यात्म का स्वरूप है।

अध्यात्म :

1. अध्यात्म का अनुसरण, परम स्वभाव का अनुसरण होता है।
2. ब्रह्म के जो गुण बहते हैं, या प्रकट हुए हैं जग में, उन्हें अपने जीवन में ले आना ही अध्यात्म है।
3. अपने में उन गुणों का आवाहन करना ही पूजा है।
4. जो जीव परम के गुण पा जाये, वह भगवान कहलाता है। रेखा बधित सृष्टि में वह परम रूप बन जाता है।
5. आत्मवान् उसे कह लो, जो मौन हो जाता है।

यज्ञ के परिणाम स्वरूप जो मौन हो जाये, वह भगवान हो जाता है। वही शिव है वही राम है, श्याम उसे ही जान लो। ब्रह्म उसका स्वरूप है, जग स्थूल रूप है और यज्ञ सूक्ष्म रूप।

नन्हीं साधिका! जो प्रजापति ने कहा, तुम भी वही करो।

क) देवताओं का जीवन यज्ञमय ही होता है।

ख) जो अपनी सम्पूर्ण सार्मथ्य निष्काम भाव से औरों की सेवा में लगा दे, वह जीव देवता ही बन जाता है।

ग) निष्काम कर्म देवत्व पाने का अभ्यास रूप है। निष्काम कर्म की पराकाष्ठा देवत्व स्थिति से भी आगे है। वह तो साधक को तनत्व भाव के अभाव तलक ले जाते हैं। हर सौन्दर्य पूर्ण गुण निष्काम कर्म में निहित होता है।❖

हृदयाकाश का वासी वह, हृदय गुहा ही धाम है..

यः सर्वज्ञः सर्वविद् यस्यैष महिमा भुवि।
दिव्ये ब्रह्मपुरे ह्येष व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितः।
मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितोऽन्ने हृदयं संनिधाय।
तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीरा आनन्दरूपममृतं यदू विभाति।।

मुण्डकोपनिषद् - 2/2/7

अर्थात् - *जो सर्वदा जानने वाला और सब ओर से सब को जानने वाला है; जिसकी जगत् में यह महिमा है यह प्रसिद्ध सबका आत्मा परमेश्वर दिव्य आकाश रूप ब्रह्म लोक में स्वरूप से स्थित है; सब के प्राण और शरीर का नेता (यह परमात्मा शरीर में व्याप्त होने के कारण) मनोमय है; यही हृदय कमल का आश्रय लेकर अन्नमय स्थूल शरीर में प्रतिष्ठित है; जो आन्नद स्वरूप अविनाशी परब्रह्म सर्वत्र प्रकाशित है; बुद्धिमान मनुष्य विज्ञान के द्वारा उसको भलीभाँति प्रत्यक्ष कर लेते हैं।*

तत्व विस्तार:

नित्य सर्ववित् सर्वज्ञ, जग महिमा रे जिसकी है।
वह परमात्म सर्वात्म, विश्व रूप ही जिसकी है।।1।।

दिव्य लोक वा धाम है, राम ही उसका नाम है।
हृदयाकाश का वासी वह, हृदय गुहा ही धाम है।।2।।

अपनी महिमा वह जाने, जग ही उसकी महिमा है।
सर्व नियन्ता ईषण कर्ता, परम नियम ही महिमा है।।3।।

सर्वज्ञाता वह आप ही, ज्ञान स्वरूप भी आप ही है।
वह काल पति वह काल भी है, आकार रहित आकार भी है।।4।।

अधियज्ञ वही अधिदेव वही, अधिभूत भये आप ही है।
वही कर्मातीत वही प्रेरक भी, प्रेरित रूप भी आप ही है।।5।।

वह गुणातीत वह गुण भये, हो गुण बधित भी वह ही है।
वह भावातीत और भाव भये, प्रभावित भी वह ही है।।6।।

अखण्ड रस अविभक्त वह, विभक्त भी हो वह ही है।
निर्गुणिया अखिल गुण भी, गुण चाहुक भये आप ही है।।7।।

अचिन्त्य सत्त्व चिन्तन भये, मन बन कर चिन्तन करे।
अतीन्द्रिय वह अग्राह्य वह, इन्द्रिय बनी वह ग्रहण करे।।8।।

नाम रूप सों जो है परे, अखिल रूप वह आप भये।
अद्वैत अखण्ड रस एक, विश्व रूप रे आप भये।।9।।

काल बने वह ऋतु बने, वर्ष मास दिन आप बने।
यह ही महिमा उसकी है, अरूप रूप सब आप बने।।10।।

ब्रह्म पुरी का वासी कहें, हिय लोक रे उसे कहूँ।
आनन्द लोक यह कारण तन, की कहें क्यों न समझूँ।।11।।

ज्ञान स्वरूप वह प्रज्ञा है, सर्ववेत्ता ईश्वर कहूँ।
कर्माशय सर्ववेत्ता, नयन लोक क्यों न कहूँ।।12।।

त्रिकाल वेत्ता और दर्शी, सर्व समर्थ रे उसे कहें।
द्यु लोक आत्म तत्व, ब्रह्म उसे क्यों न कहें।।13।।

प्राण और तन के नाते, वह, मनोमय रे आप भये।
हिरण्यगर्भ का रूप धरे, तैजस कह लो आप भये।।14।।

आन्तर लोक यह जीव भाव, प्राण और तन नाते भये।
हृदय लोक सों लौटकर, तन्मात्रा महाभूत भये।।15।।

भोगी पक्षी कहलाये, रजोगुणी वह हो जाये।
क्यों न कहूँ कारण तन, बीज फूटने को आये।।16।।

अखण्ड तत्व ईश्वर भये, तैजस रूप अब धरी आये।
सत्त्व लोक में लय जो थे, भाव स्वभाव बनी आये।।17।।

कर्मन् संस्कार कहूँ, प्रदुर भये वेग पाये।
कर्म बीज रे प्रकटन् को, हिरण्यगर्भ में आ जाये।।18।।

हृदय मौन लोक रे था, मन भाव लोक में आ गये।
प्राण और तन के नाते वह, मनोमय अब कहला गये।।19।।

हृदय के आसरे ही जाने, स्थूल तन वह पा रहे।
मनोमय सों रूप धरे, अन्नमय में आ रहे।।20।।

बाह्य प्रज्ञ वह कहलाये, उत्पत्ति वह हो जाये।
मन में रे थी स्थिति, प्रकट बाह्य रे हो जाये।।21।।

पृथ्वी लोक विराट रूप, महाभूत का रूप धरे।
सूर्य बीज रे वृक्ष भया, पूर्व कर्म रे फल लगे।।22।।

व्यष्टि कोण सों तन वृक्ष, समष्टि कोण विराट रूप।
व्यष्टि जग स्पर्श मात्र हुआ, समष्टि कोण विश्व रूप।।23।।

अखण्ड विभाजित सा हुआ, सब हो कर कुछ न हुआ।
अहम् संग और चाहना का, भाव झमेला लग गया।।24।।

आनन्द स्वरूप के भावन् का, वृत्ति प्रवाह यह जग सारा।
स्वप्न में द्रष्टा ही ज्यों है, स्वप्न का रे जग सारा।।25।।

द्रष्टा जग रे जो भी है, परम की ही रे महिमा है।
व्याख्या उसकी रे कह लें, स्वप्न की ही महिमा है।।26।।

धीर पुरुष विज्ञानवान, जग खेल का कारण देख ले।
गुण गुणन् में वर्त रहे, प्रत्यक्ष ही सब देख ले।।27।।

आनन्दमय ईश्वर भाव, सर्व व्यापक देख ले।
कर्माशय का प्रभाव, स्पष्ट सामने देख ले।।28।।

जाने परम रे है परे, महा कारण वह जान ले।
अखण्ड रस अद्वैत तत्व, महा मौन पहचान ले।।29।।

स्वरूप जग खिलवाड़ परे, बिम्ब जहान यह जान ले।
इनसों उठ कर सन्त वह, अपने आपको जान ले।।30।।

होई मन से परे बुद्धि से परे, मौन होई कर जान ले।
अखण्ड में देख अखण्ड होई, कर उसे तू जान ले।।31।।

जग के कोण से कहते हैं, कह के सब कुछ जान ले।
निर्मम निर्भाव हो कर, क्या सब कुछ जान ले।।32।।

जड़ तन ही जो रह जाये, वह राम की प्रतिमा हो जाये।
जो भी शब्द रे वह कहे, प्रमाण जहान का हो जाये।।33।।

ज्ञान स्वरूप रे वह ही है, ज्ञान रे कौन अब क्या जाने।
अद्वैत में रे ज्ञान नहीं, अपने आपको क्या जाने।।34।।

जड़ मूर्त यह जग देखे, जो पूछे उत्तर पाये।
जैसी भावना से पूछे, भावना सफल ही हो जाये।।35।।

जो भी चाहना जिस मन में, लिये शरण में आ जाये।
दर्शन मात्र से परम की, पूर्णता वह पा जाये।।36।।

किस मन्दिर में जाये वह, आप ही मन्दिर हो जाये।
जहाँ कदम रे वह धरे, महा तीर्थ रे हो जाये।।37।।

वा का शब्द ही शास्त्र भये, पूजन उसका हुआ करे।
याद रहे रे सब कह कर, ब्रह्म स्वरूप रे कुछ न कहे।।38।।

प्रत्यक्ष किया उस राम को, प्रत्यक्ष राम ही हो गया।
जिसने उसका नाम लिया, राममय वह हो गया।।39।।

परम उसी को जान लो, ब्रह्म वह आप ही हो गया।
वा चरणन् में जो गया, परम चरण में खो गया।।40।।

साधना लक्ष्य रे यह ही है, वह आप लक्ष्य हो गया।
गुणन् सों वह हुआ परे, गुणपति ही हो गया।।41।।

मन नहीं कोई चाह नहीं, सब स्वत: ही होता है।
अपनी अब रेखा नहीं, अन्य रेखा ही होता है।।42।।

अनेक जन दर्शन पा कर, भव सागर तर जाते हैं।
रेखा में जिनसे कहा, दर्शन वह ही पाते हैं।।43।।

यह ही कहानी साधक की, लक्ष्य तलक है पहुँच चुकी।
उसकी चाहना नहीं रही, जो मन वहाँ पर पहुँच चुकी।।44।।

हुआ मनो मौन नहीं महा मौन, कर्म बीज कोई नहीं रहा।
तन से जिस पल उठ गया, जन्म कबहुँ नहीं रहा।।45।।

17-9-61

आपके आशीर्वाद बिन, मैं बिलकुल अधूरी हूँ!

श्रीमती पम्मी महता

हे माँ! किस तरह अपनी अनन्त महिमा में उतार मुझे प्रार्थनाओं ही प्रार्थनाओं से भर लिया!

आप श्री हरि जगद्जननी माँ प्रभु जी की वन्दना करती हूँ। ख़ुदा करे, 'अपनी 'मैं' के द्वार पर लौट कर कभी न जाऊँ.. आपकी मेहर से ही आपके द्वार पर आई हूँ.. उसी का सदका उतारते हुये यही दुआ करती हूँ कि जो भी आपके द्वार पर इसे मिले उसे ही सहर्ष स्वीकार करते हुये, उसी में सन्तुष्ट रहते हुये आप माँ के श्री हरि चरणन् में रह पाऊँ! इस संकुचित हृदय को अपनी विशालता से नवाज़ने वाले, आपको आपकी कनीज़ का शतः शतः प्रणाम!

आप ही से आपको पा कर आप ही में समा जाऊँ..
यही परम सत्य है जीवन का, यूँ ही जीवन में इसे साधे जाऊँ..
अनजान थी जब तलक, इस 'मैं' को ही अपनाती रही.. अब के इसे न अपनाऊँ!
'तू करे कराये आपो आप' इसी सत्य में मिटती हे प्रभु जी जाऊँ..
मैं ख़ुद नहीं कुछ कर पाऊँ, बेख़ुदी में तुझी से याचना करती जाऊँ
जब तलक आप अपने में इसे मिटा न लो, तोरा नाम ही लेती जाऊँ..
प्रभु, प्रभु, बस माँ प्रभु जी ही का नाम मैं लेती जाऊँ! हरि ओम्

जो आंतर की पीड़ा मुझे व मेरे हृदय को, मेरे आंतर मन को छलनी किये रहती थी। आप कृपालु दयालु नाथ ने उस असहनीय पीड़ा सों कैसे मुझे मुक्त कर लिया। सच ही जीवन में आप जैसे सदगुरु की कितनी आवश्यकता है जीव जगत को.. इसका बखूबी अंदाज़ा हो गया है, हे माँ प्रभु जी!

हे परम वन्दनीय श्री हरि माँ प्रभु जी, आज आपकी चरण रज सीस चढ़ा कर आप ही को तिलक करती हूँ और आप ही को विनम्र नमन देती जाती हूँ, 'हे कृपालु नाथ, इसे अपने में ही विस्तार देकर सनाथ किये रहियेगा.. जो आप ही में मिटने का परम सौभाग्य पाये रहूँ! हे गंगा माँ, जो भी इसके कोई कहीं भी अवशेष रह जायें, उन्हें अपने में प्रवाहित कर लीजियेगा। आपकी इस असीम कृपा की सदा आभारी रहूँगी।

हे श्री हरि माँ, आप हर हृदय में वास करते हैं। इसलिये आपके हर रूप को ही प्रणाम करती हूँ। सभी को प्रणाम करते हुये यही सभी के लिये दुआ करती हूँ कि यारब, सभी को आप ही की छत्रछाया मिले जो हर हृदय में आपका प्रेम ही विस्तार पाये व सभी इसी आपकी प्रीत से पुष्टित व पल्लवित रहें.. आमीन!

हे मंगलदायिनी, जिस मंगलमय पथ को आपने अपने क़दमों से नवाज़ा है उसी पथ पर अग्रसर होने का इसे आशीर्वाद दिये रहियेगा। सच माँ, आपके आशीर्वाद बिन मैं बिलकुल अधूरी हूँ। यह सत्य आपसे छिपा नहीं है माँ.. मेरे जीवन में सदा आप ही की जय हो। आप ही आप विजयी हों यही विनीत प्रार्थना है आपसे माँ मोरी! हे माँ, इस हृदय की आरत पुकार को आप ही आशीष दिये रहियेगा। मेरी प्रार्थनाओं में मैं पूरी तरह नम हूँ और विनम्र प्रार्थना करती हूँ, 'अपनी पूर्ण की पूर्णता में इसे बहा कर लिवा ले जाइयेगा।'

आप श्री हरि माँ ने मुझ से कहा था, "तू जो लिखेगी, जन कल्याण के लिये ही होगा!'' आपकी वाणी की सत्यता का आभास मात्र ही नहीं, इसका अनुभव भी है मुझे.. अपनी उस पराकाष्ठा तक ले जाने को, इस सत्य में वह आशीर्वाद छिपा हुआ था मेरे माँ प्रभु जी का.. आ, 'तुझे सभी के बीच सभी की हो कर रहने की आशीष देती हूँ।'

जो परम पिता परमेश्वर स्वयं विश्व रूप हैं.. यूँ दिव्य शरीर धारण करी व अपनी ना ना प्रकार की लीला करते हुये कैसे स्वयं को प्रकट करते हैं.. फिर विलीन भी हो जाते हैं। कितने दिव्य व अलौकिक दर्शन हैं आप विभूति पाद श्री हरि माँ के, जिनसे आप निरन्तर हमें सनाथ करते चले आ रहे हैं। साधक के हित के लिये यूँ श्री विग्रह धारण कर जब लीलायें करते हैं तो वह अलौकिक व दिव्य दर्शन इस क़दर आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बन जाता है कि इसी धुरी पर जीवन घूमने लग जाता है। यूँ ही आप सभी पर कृपा बनाये रखते हैं।

भक्त और भगवान के इन दर्शनों में आपने मेरा नाम भी बोला, इसके लिये आपके प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुये आप माँ को कोटि कोटि नमस्कार है मेरा! जिस काज अर्थ आपने इसे प्रेरणा

दी है, आप ही बताइये मेरी अल्पबुद्धि उस अग्राह्य को कैसे ग्रहण करेगी। आप माँ से ही मेरी अनुनय विनयपूर्वक प्रार्थना है कि अपने इस मनोरथ को इस जीवन में आप ही स्वयं सिद्ध करियेगा। हे सरस्वती माँ, आपके राही पूज्य श्री हरि माँ इस काज को स्वयं सिद्ध करा लेंगे.. मुझे उनमें व उनके वाक् में दृढ़ विश्वास भी है और आस्था भी!

इस पतित को पावन करी पतित पावन नाम धराने वाले आप ही से विनीत अरदास है मेरी.. अपनी कही वाणी की लाज आप स्वयं ही रखियेगा.. यही मेरी प्रार्थना याचना है, हे श्री हरि माँ आपसे!

आप कृपालु दयालु माँ ने इस कुटिल के हृदय में अपना नाम भर कर इस हृदय रूपी बेल पर जो अपने नाम के पुष्प खिलाये हैं, उनकी दिव्य सुगंध से हृदय आँचल में अपने प्रेम की कोमल कोमल कलियाँ खिलाई हैं, उन्हीं का वास्ता देते हुये यारब आप सभी को प्रणाम देती हूँ।

इस संसार की चर-अचर सृष्टि में आप ही की व्याप्कता को कोटि कोटि प्रणाम देती हूँ। हे भुवनेश्वर, आप ही के चरण कमलों की वन्दना करती हूँ.. सभी में आपको पाकर ही सभी मेरे वन्दनीय हैं। हे जगदीश्वर, आप ही बताइये जिसकी बुद्धि विवेकहीन हो व मन अमन न हुआ हो, जिस पर आप ही ने इतना ऊँचा लक्ष्य निर्धारित किया हो.. उसे मुझ जैसी नमानी नहीं, आप माँ प्रभु जी ही सफल कर सकते हैं। इसी लिये आप ही से प्रार्थना याचना करती हूँ, 'हे योगेश्वर, इस योग साधना के निमित्त जो भी मनोरथ सफल करना है, आप स्वयं ही कीजिये।'

इसके आंतर से अपने लिये ही क़दम उठवाइये.. जो आपसे पाई देन ही विस्तृत विस्तार पा जाये। आपके जीवन का विस्तार अतीव विलक्षण व भव्य है। हे वन्दनीय माँ प्रभु जी, अपनी 'मैं' का नाम लिख कर अपनी ही मुहब्बत को छोटा न कर दूँ.. यही दुआ है और प्रार्थना भी है आपसे मेरी कि आप ही का काज सिद्ध हो, आपके राही मुझसे!

यह सत्य है कि आपने इसे निमित्त होने का गौरव प्रदान किया हुआ है। अतीव विनीत भाव से आप ही के श्री चरणन् में धरते हुये आप से मंगल याचना करती हूँ.. इस 'मैं' को जिसे स्वयं आपने धराशायी किया है, पुनः उठने न दीजियेगा।

हे माँ प्रभु जी, इन आपके क़दमों को देखते हुये मेरा आंतर, मेरा चित्त भी पूर्णतया शुचि पावन हो जाये.. यही शुभकामना करते हुये आप ही आपसे आशीर्वाद माँगती हूँ। आप माँ के असीम प्रेम व अनुग्रह से ही इसकी साधना को आप में विराम मिल जायेगा। हे माँ, सभी के क्लेश मिटा कर सभी को सुख देने वाले आप सुख दाता को बारम्बार नमस्कार करती हूँ।

आपकी सेवा जिस रूप में भी मिले, इसे उसी रूप पर पूर्णतया समर्पित कर लीजिये। जो आपकी हर सेवा में एक सच्चे सेवक की तरह अर्पित व समर्पित रहूँ। आपकी ही प्रार्थना आप ही के चरणों में धरती हूँ, इसे स्वीकार कीजिये-

इतना बड़ा सौभाग्य मेरा, संकल्प पिया मैं तुम्हारी हूँ।
तव माया में तव रचना में, जो हूँ सब ही मैं तुम्हारी हूँ।।

इतनी बिनती करूँ मैं राम, हर पल मुझ को याद रहे।
अपना ले ले मेरा दे दे, लब पे यही फ़रियाद रहे।।

तन जहाँ जाये तू ले जा पिया, तेरा तुझ को दे है दिया।
अपना तो तूने ले ही लिया, पर मेरा क्यों नहीं दे रहा।।

नाम रूप जो मेरा है, यह ही अज्ञान का ढेरा है।
अब जान गई हे राम मेरे, जो है सब ही पिया तेरा है।।

चल इतना कर इक बेरी आ, तेरा तुम को दे दूँ मैं।
राम ही एको मेरा है, प्रभु मेरा तुम से ले लूँ मैं।।

- परम पूज्य माँ

(प्रार्थना शास्त्र 1/297 - 25.1.1960)

मेरी साधना आराधना को आशीर्वाद दीजिये जो यह सच ही आपकी पूजा के योग्य हो जाये। आप ही के प्रेम प्रवाह में यह प्रवाहित रहे। आप ही के श्री हरि चरणन् में इसे स्थान मिला रहे। मेरे सभी ग्रहों में आप ही का बस वास हो। आप ही के इस पुण्य तीर्थ में मेरे प्राण जागे रहें.. हरि ओम्!

निष्काम प्रेम का प्रभाव

श्रीमती सत्या महता

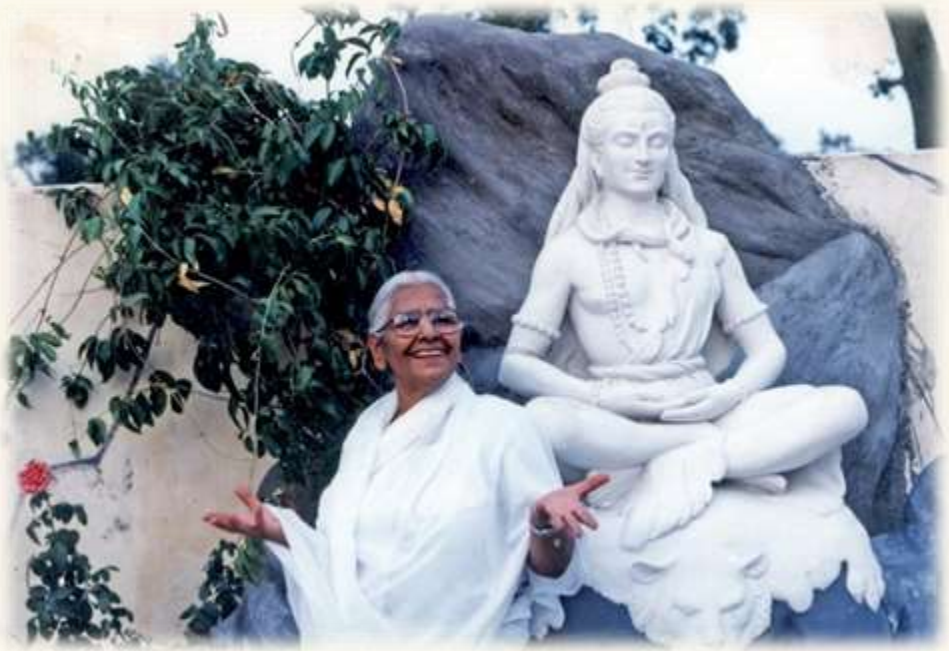

लाला राम नारायण की जन्म भूमि पंजाब थी। वह भगवान शिव शंकर के अनन्य भक्त थे और प्रतिदिन शिव जी का पूजन, शिव सहस्र नाम का पाठ, महामृत्युञ्जय महामन्त्र का भक्ति पूर्वक जप करते थे। उनकी पत्नी शारदा और पुत्र शम्भुकरण भी भगवान शिव के बड़े भक्त थे। इसी प्रेम से बंधे वह एक दिन अपनी जन्म भूमि पंजाब छोड़ कर भगवान शंकर की मोक्षदायिनी नगरी काशीपुरी में आ गये। उनका एक मित्र दयाली राम भी उनके साथ ही काशीपुरी आ गया।

लाला राम नारायण तो शिव शंकर की निष्काम भक्ति करते थे.. पर उनसे कोई माँग नहीं रखते थे। परन्तु शंकर जी की कृपा से उनके व्यापार में उन्हें लाभ होने लगा। दिन प्रतिदिन उनके व्यापार में तरक्की होती गई और जल्द ही वह सब प्रकार के सुख समृद्धि से सम्पन्न हो गये। साधारणतया देखा गया है कि धन से स्वार्थ और अभिमान बढ़ा करता है, पर यहाँ तो बिलकुल विपरीत परिणाम था। ज्यों ज्यों धन बढ़ने लगा, राम नारायण में विनम्रता, विनय और त्याग की भावना भी बढ़ने लगी।

वह जानते थे कि सत् पुरुषों के पास आये हुए न्यायोपार्जित धन का सुकृत और सेवा में ही सदुपयोग किया जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार वह अपना सारा धन सत्कार्यों में ही लगाते। दीन दुखियों की सेवा करना, उनके दुःखों का निवारण करना तो उनके जीवन का सहज स्वभाव बन गया था।

इनके मित्र दयाली राम जी भी इनके साथ ही काशी आये थे। अपने मित्र राम नारायण की दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति देख कर वह मनोमन उनसे द्वेष करने लगे। उनका यह द्वेष दिन प्रतिदिन बढ़ता

ही गया। यह तो जीव का स्वभाव है कि अपने पर उपकार करने वाले के प्रति ही उसका मन होड़ और द्वेष से भर उठता है।

दूसरी ओर राम नारायण जी तो अपने मित्र दयालीराम के साथ बड़ी उदारता और प्रीति का व्यवहार करते थे। उनको तो अपने मित्र के आंतर में उठने वाले भावों का अनुमान भी नहीं था।

यह द्वेष का भाव एक तरफ़ा ही था। बढ़ते बढ़ते यह इतना बढ़ गया कि दयाली राम के व्यवहार में वह प्रत्यक्ष दीखने लगा। दयाली राम दूसरे लोगों के सामने राम नारायण को अपमानित करने लगा।

एक दिन राम नारायण गंगा जी से स्नान करके लौट रहे थे तो दयाली राम ने अचानक आकर उनको मारना आरम्भ कर दिया। उसकी इस हरकत पर राम नारायण को क्रोध नहीं आया। दृष्ट रूप में तो वह चुपचाप वहाँ से चले गये परन्तु अपने साथी की इस गिरी हुई हालत को देख कर उन्हें उस पर बड़ी दया आई और वह मन ही मन उसकी अवस्था देख कर दुःखी हो गये। वह सोचने लगे कि मुझे इससे और भी अधिक प्रेम करना चाहिये, ताकि इसका द्वेष और मनोमल प्रेम की निर्मल धारा में धुल जाये।

यही सोचते सोचते उनकी आँख लग गई। जब आधी रात को आँख खुली तो वह भगवान शंकर से प्रार्थना करने लगे, 'हे दीनानाथ! मेरे मन में जो मल है उसे धो डालो भगवन.. ताकि मेरे मित्र के प्रति मेरा शुद्ध प्रेम बहे, जिससे उसका द्वेष कहीं टिकने न पाये। 'यह सब जो मेरे पास है, वह तो आप ही का दिया हुआ है। मेरे मन में जो भी दुर्भाव हैं, जो भी मल है, उसको धोकर आप मेरे आंतर में शुद्ध प्रेम पैदा कर दो।'

भगवान से ये बातें करते करते वह मनो समाधिस्थ हो गए। भगवान शंकर साक्षात् उनके सामने थे। अपने ही दोषों को कोसते कोसते राम नारायण जी बार बार कहते, 'हे भगवान! दयाली राम का मन साफ कर दो, उसे सुखी कर दो। मेरा सारा धन लेकर चाहे मुझे भिखारी ही बना दो, परन्तु उसे सुखी कर दो।'

इसी प्रकार प्रार्थना करते करते जब उनकी आँख खुली तो उन्होंने देखा कि भगवान शिव शंकर तो वहाँ नहीं थे। परन्तु उनका मित्र दयाली राम उसके चरणों में गिर कर अपने दुर्भावों और दुर्व्यवहार के लिये बार बार क्षमा माँग रहा था। लाला राम नारायण के प्रेम के प्रवाह ने दयाली राम के आंतर के सारे द्वेष को धो दिया। उसका हृदय द्रवीभूत होकर आँसू बन कर उसकी आँखों से बह निकला। प्रायश्चित की अग्नि में जलते अपने मित्र को राम नारायण ने अपने हृदय से लगा लिया। उनके प्रेम से दयाली राम का द्वेषपूर्ण मन भी निर्मल हो गया और वह अपने मित्र के गुणगान करने लगा। ऐसा होता है निष्काम प्रेम का प्रभाव जो सब विपरीत भावों को अपने वेग में बहा कर ले जाता है!❖

अवतार कौन

पिता जी - शास्त्रों में भगवान को अजम कहा है, यानि परमेश्वर में जन्म का अभाव है। यदि ऐसा है तो अवतार किसे कहते हैं?

सारांश - परम विशिष्ट ब्रह्म गुण सम्पन्न जीव को अवतार कहते हैं। तनधारी दर्शाते हुए भी वह निज तन, मन, बुद्धि तथा जग के गुणों से प्रभावित अथवा लिप्त नहीं होते। वह भगवान समान जीवन में धर्मानुकूल व्यवहार विधि का प्रमाण सहित निरूपण करते हैं।

प्रश्न अर्पण

अजम तुझे हे राम कहें, जन्म नहीं तेरा होता है ।
फिर अवतार क्या होता है, और भगवान क्या होता है।।1।।

अप्रकट का प्राकट्य क्या, अप्रकट प्रकट कैसे होये।
जन्म अजम का कैसे हो, निरावरण यह राज़ होये।।2।।

तत्व ज्ञान

अवतार ब्रह्म की शक्ति के, अवतीर्ण को कहते हैं।
ब्रह्म व्यक्तिगत रूप धरे, अस जीव रूप को कहते हैं।।3।।

देवत्व लिये वह पृथ्वी पर, जीव रूप अभिव्यक्त भये।
ब्रह्म के गुण निज जीवन में, उदाहरण बन अनुवाद करे।।4।।

पुरुषों में पुरुषोत्तम बन, ब्रह्म पुत्र बनी कैसे रहे।
पूर्ण का तू अंश मात्र, पूर्णता में कैसे रहे।।5।।

दैवी गुण सम्पन्न भये, स्थित बुद्धि वह हो जाये।
राम समान भये वा जीवन, राम प्रकट वहाँ हो जाये।।6।।

ब्रह्म की शक्ति अवतरित, जिस पल जीव में होती है।
शक्ति तनो मिलन से जान, तन भगवान की होती है।।7।।

ज्यों रेखा हर जीव को, जीवन में प्रेरित करती है।
ब्रह्म शक्ति भगवान को, कह लो प्रेरित करती है।।8।।

रेखा ब्रह्म वह आप भये, विधान का वहाँ राज्य हुआ।
'मैं' का भाव ही नहीं रहा, जो रहा भगवान रहा।।9।।

अखण्ड मौन का वाक् वहाँ, अपने प्रति है मौन वहाँ।
करुणा पूर्णता भी वहाँ, विकराल रूप भी है वहाँ।।10।।

प्रिय भाषी वह आप हैं, स्पष्टवाद का तीर वहाँ।
प्रथम वाक् विषपूर्ण लगे, निहित रूप अमृत है वहाँ।।11।।

झुके हुए वह माटी हैं, दर्शन में अकड़ाव वहाँ।
चाकर बन के रहते हैं, कर्मातीतता देख वहाँ।।12।।

गुण बँधे से दर्शायें, गुणातीतता देख वहाँ।
प्रेमघन का प्रेम रूप, महा वैराग्य भी देख वहाँ।।13।।

उदासीनता में वह स्थित, सहज जीवन देख वहाँ।
निज बुद्धि से संन्यास वहाँ, अद्वैत का स्वरूप वहाँ।।14।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

निर्गुणिया के गुण हैं जो, गुण बधित नहीं हो पायें।
गुणातीत जो कहलाये, वा गुण प्रकट वहाँ हो जायें।।15।।

तन रहित है पूर्ण जो, इक अंश मात्र बन प्रकट होये।
अव्यक्त गुण सम्पूर्ण ले, माया बधित वह प्रकट होये।।16।।

तन में है पर तन से परे, तन बधित न कर पाये।
मायिक है माया परे, माया उसे न छू पाये।।17।।

तन में जो अप्रकट तत्व, प्रकट हो ही जाता है।
जो उस तत्व को जाने है, पहचान वही उसे पाता है।।18।।

हो तन से परे हो मन से परे, बुद्धि से भी जो हो परे।
पूर्ण जग का इक कण भी, जिसको कबहुँ न छू सके।।19।।

समझ मना समझाऊँ तुझे, चाह रहित वह आप है।
तनधारी दर्शाये वह, पर तन से परे वह आप है।।20।।

वा के गुण क्या देखे मन, नयन देख नहीं पायेंगे।
गर सहवास ही हो गया, अनुभव में वह आयेंगे।।21।।

इक तन बुत पे राम की, करुणा जिस पल हो गई।
अरुणा बन के राम तत्व, दीदायमान वहाँ हो गई।।22।।

तनधारी तन अपनाकर, जो उसी में वास करे।
'मैं तन हूँ मैं मन हूँ, मैं बुद्धि' जो आप कहे।।23।।

जीव उसे ही कहते हैं, 'मैं' ही जीव बनाये है।
जब 'मैं' तन में नहीं रहे, वहाँ राम वास हो जाये है।।24।।

तन बधित उसे कहते हो, उसका तन तो कोई नहीं।
जन्म हुआ तुम कहते हो, उसका जन्म ही कोई नहीं।।25।।

'मैं' का तन ही नहीं रहा, तो 'मैं' का जन्म ही हुआ नहीं।
मन बुद्धि 'मैं' के नहीं, तो 'मैं' की स्थिति कोई नहीं।।26।।

तनो आयु तनो गुण भी, एक नहीं अब उसका है।
तन भया जब राम का, जो गुण है बस उसका है।।27।।

इसी विधि मनो गुण भी, वहाँ एक नहीं पाओगे।
सच तो यह उस मन रहित को, देख नहीं तुम पाओगे।।28।।

तनधारी उसे क्या देखे, जहाँ एक बुत ही रह गया।
केवल माटी का बुत वह, वहाँ भ्रम मात्र ही रह गया।।29।।

वा का मन है वहाँ नहीं, स्वभाव बँधा बह जाता है।
जैसे ध्याये कोई उसे, वैसे वह उसे ध्याता है।।30।।

जो मूर्त में माने हो, वही वहाँ सब होये है।
जीव समान वह मूर्ति, राम की ही होये है।।31।।

अप्रकट कहो प्रकट हुए, विधान ही उन पे राज्य करे।
प्रज्ञा उनका वाक् भये, जीवन सत् प्राकट्य भये।।32।।

कोई कर्म न अपनाये, स्थूल में तन रमण करे।
इक माटी का बुत रहा, जिसको तुम हो देख रहे।।33।।

बुद्धि गुण कोई देख ज़रा, उसको नहीं कभी बाँध सकें।
बुद्धि निर्णय से वह परे, गुण बँधे कस जान सकें।।34।।

तन क्या करे कैसा होये, इसपे ध्यान वह नहीं धरे।
पल में शिशु पल में ज्ञानी, क्रूर रूप भी आप धरे।।35।।

आपुनो भावना अनुकूल, जग वाले दर्शन लेते हैं।
जो समझें वह तन नहीं, भगवान उन्हें कह देते हैं।।36।।

इक मूर्त के बिन वहाँ, जान ले कुछ भी नहीं रहा।
दीदायमान वह बिन 'मैं' के, देख स्वतः है हो रहा।।37।।

वा तन है यह बात नहीं, तुम तन देखे जाते हो।
वा मन है वहाँ मन ही नहीं, किसका मन कहे जाते हो।।38।।

तनो बातें भी विलक्षण हों, कुछ हो तन को हुआ करे।
तनो अवस्था न देखे, कह लो त्यागी हो चुके।।39।।

इसी विधि निज मन को, वह कबहुँ न देखे है।
रुचि अरुचि जो तुम कहो, वह नहीं कुछ देखे है।।40।।

कोई उसको प्यार करे, ऐसी चाहना वहाँ नहीं।
तन को कोई मान दे, तन तदरूपता वहाँ नहीं।।41।।

आपुनो तन होता वहाँ, मान की चाहना हो जाती।
'मेरा तन अभिषेकित हो', भावना ऐसी हो जाती।।42।।

ज्ञानघन वह आप ही है, दुःखघन उसको कहते हैं।
सत्यघन वह आप है, अप्रकट प्राकट्य कहते हैं।।43।।

यह कहने वाले कहते हैं, पर उसका जन्म ही नहीं हुआ।
'मैं' का जहाँ अभाव हो, उसका जन्म ही क्या होगा।।44।।

अव्यक्त गुण न दर्शायें, पर बहाव वहाँ बहता है।
अनेक बार बुत रूपा जग, उनको दुष्ट भी कहता है।।45।।

अनेकों संशय होते हैं, अपमानित करते रहते हैं।
वह उनकी क्या बात करे, जो तन से परे ही रहते हैं।।46।।

कौन गुण प्रकटे वहाँ, इसकी कौन अब कह सके।
समष्टि प्रमाण जो गुण चाही, वह ही वहाँ से बह निकले।।47।।

जिस पल बहे बहाव में, पहचान उसे कोई नहीं सके।
विलक्षण गुण हैं राम के, यह जग क्योंकर देख सके।।48।।

ऐसे गुण वहाँ बहते हैं, जो जग सारा चाहे है।
पर वह गुण वहाँ पे हैं, यह जग मान न पाये है।।49।।

महा साधारण जीवन हो, हर साधक वस जी सके।
सत् सों साचो लग्न हो, सहज में वह जीवन भये।।50।।

इस कारण ही बार बार, वहाँ संशय उठी आये है।
सोचें हमसा सरल जीवन, राम कहाँ कस पाये है।।51।।

अपुनो भावना उसपे भी, आरोपित जग सब करता है।
जैसा कोई आप है, वही दुर्गुण उसपे मढ़ता है।।52।।

उसे कहो वह इक तन है, यह भी मिथ्या आरोप है।
कोई गुण कहो उसका है, यह कहना ही दोष है।।53।।

जीव की श्रद्धा अनुकूल, रूप वह धरते जाते हैं।
परम गुण प्रमाण रूप, उपमा बन वह जाते हैं।।54।।

वह जन्में पर न जन्में, यह राज़ कोई न समझ सके।
गुण भगवान के जो मानो, हर गुण वहाँ पे नित प्रकटे।।55।।

19.3.1966

पायो जी मैंने राम रत्न धन पायो!

श्रीमती पम्मी महता

हे श्री हरि परम पूज्य माँ, आपको कोटि कोटि प्रणाम! आप श्री हरि माँ के जन्म दिवस की हम सभी को व पूर्ण जगती को बधाई! हम सभी बड़े भाग्यशाली हैं जो आपकी जीवन यात्रा का अभिन्न अंग बनने का परम सौभाग्य पा गये। आपका इस धरती पर अवतरण, वह भी भारत भूमि पर, हम भी इस जीव दर्शन के भागीदार बन धन्य धन्य हुये.. व हो रहे हैं!

धन्य हैं आप माँ व आपका पूर्ण कुल.. आप ही से उनकी महिमा का अवलोकन कर पा रहे हैं! आपकी कृपा से व आपके असीम अनुग्रह से आपके श्री चरणन् में बैठने का परम सौभाग्य पा गये। बहुत ही कृतज्ञ हैं आपके इस दिव्य प्रसाद के। आपकी जीवन की सू-धारा के अतीव सुन्दर व विलक्षण प्रवाह को सुनते आये हैं.. बड़े ही दुर्लभ दर्शन के भागीदार बन पाये हम सभी! आप श्री हरि परम पूज्य माँ ने स्वयं चल कर हमें संग संग चलाया भी और अपनी अनुभवी जीवनी के अदभुत व विलक्षण दर्शन भी कराते चले गये।

अनुभवी के क़दमों ने किस क़दर अपने जीवन के विलक्षण क़दमों को धरती पर भी और हमारे हृदयों में भी वास कराया इस परम ज्ञान व विज्ञान को.. जीवन अपने की परम सत्यता को हमारे हृदय में भर कर धन्य धन्य किया आपने! जितना भी आपका शुक्रिया अदा करें, हे श्री हरि माँ, कम ही है!

बस यही दिल से करबद्ध इल्तिज़ा करती हूँ कि आपके क़दमों का सदका उतारते हुये व आप ही से प्रेरित हो कर आपके क़दमों में ही यह जीवन विसर्जित कर पाऊँ.. इसी विनीत प्रार्थना से आपसे पल पल विनती करती हूँ, 'जो भी आपने अपने जीवन का अद्भुत व विलक्षण प्रसाद दिया है, उसे ही

सदा सदा के लिये अंगीकार कर पाऊँ। यही तहेदिल से मेरी अरदास भी है व विनीत प्रार्थना भी सदा सदा के लिये! आमीन।'

इतनी सरलता व सादग़ी से अपने महान सौंदर्य की अभिव्यक्ति कैसे कैसे आपने की है.. आश्चर्यचकित हुई देखती ही रह जाती हूँ।

वक्त ऐसा भी आ गया कि जीवन की तस्वीर ही बदल गई.. डॉ. साहिब (डॉ. रमेश महता) की बीमारी से मेरा सारा जीवन, डॉ. साहिब की बीमारी में ही सिमट कर रह गया। कभी यह करना, कभी वह करना है.. इसके इर्द-गिर्द ही मेरा जीवन चक्र चलने लगा.. कब चार वर्ष का समय गुज़र गया, पता ही नहीं चला। जैसे जैसे वक्त मेरा खिसकता गया डॉ. साहिब की श्वासों की गिनती कम होती चली गई। कितनी बेबस व लाचार महसूस करती.. मगर अपनी पीड़ा का किसी को एहसास नहीं होने देती थी। आंतर में टूट भी जाती.. बिखर भी जाती.. फिर भी अपने को धैर्य बंधाती रहती।

'फिक्र न कर, ईश्वर की जो रज़ा होगी वही तू क़बूल करती रहना.. जो बैस्ट है, वही करती चल इनके लिये.. जिनके साथ इतना साथ निभाया है आपस में, वैसे ही निभाती चल। ईश्वर तेरे साथ हैं बस परेशान न हो..' अपने को यूँ ही ढाढस बँधा लेती।

इस तरह चलते चलते वह दिन भी आ ही गया.. वियोग के पलों के सफ़र की शुरुआत होने के लिये ख़ुद को तैयार तो होना ही होता है। सभी परिवार के लिये और भी बड़ी ज़िम्मेदारी आ जाती है। बड़ा हौसला रखना होता है. सभी बच्चों के आँसू भी एक माँ ही अपने में समेट लेती है, और फिर सभी के लिये जीना शुरु कर लेती है।

इसी दौरान कुछ वक्त ऐसा भी आया जहाँ पूज्य माँ और भी कुछ सिखाने के लिये मुझे तैयार करने के छोटे छोटे संदेश देने लगे। मेरे काम वाले बरसों से इतने ईमानदार लोग थे कि कभी वह ख्याल ही नहीं आता था कि मेरे घर में भी चोरी हो सकती है। मगर वस्तुएँ गायब होनी शुरु हो गईं.. ज़ाहिर था, मेरे लिये यह अनुभव बड़ा दुःखदायी था- मन को मनाती फिर सिहर उठती.. यह सिलसिला कुछ महीने चलता रहा परेशानी रहने लगी मुझे।

एक दिन अचानक ऐसा दिन भी आ गया जब श्री हरि परम पूज्य माँ मेरे हाथों से कुछ न कुछ लेने लगे.. वही चीज़ें, जिन्हें मैंने बड़े ही प्यार से बरसों से सहेज कर रखा था और खूब इस्तेमाल भी किया करती थी.. उनसे मेरी यादें भी जुड़ी हुई थीं। खैर, अफसोस तो मुझे आता व बार बार आ रहा था.. एक दिन आपने मेरी इस पहेली को भी सुलझा दिया.. बड़ी ही सरलता से!

आपने इन चीज़ों से मेरे हाथ खाली इस लिए करने शुरु कर दिये कि आप मुझे इन हाथों में कुछ बहुत अच्छा देने वाले हैं..

मन यह ही गुनगुनाने लगा।

'पायो जी मैंने राम रत्न धन पायो।'

कोटि कोटि धन्यवाद मेरे प्रिय परम पूज्य माँ! विभूतिपाद इससे कहीं अनमोल व विलक्षण कुछ देने वाले हैं.. इस क़दर मेरा मन शांत होने लगा। आपने मेरी मुहार जो मोड़ दी।

कोटि कोटि धन्यवाद माँ, ज़ाहिर है जो मुझे आप स्वयं देगें। हे परम पूज्य श्री हरि माँ, बहुत ही अनमोल धरोहर होगी आपकी मुझे! बड़ी पावन भी होगी व दिव्य प्रसाद रूप भी होगी। सच में मैं धन्य धन्य हो गई। कितनी सरलता से आपने मुझे समझा दिया। मुझे आशीर्वाद दीजिये कि बड़े दिल से इसे स्वीकार करी, अंगीकार भी कर लूँ।

हे श्री हरि नाथ, आप अपने से मुझे सनाथ कर लीजिये.. मेरी जीवन नैया को आप ही थाम लीजिये.. आप ही के शब्द स्मरण हो रहे हैं-

मेरी जीवन नैया थाम लो, कौन राह दिखा जा रे।
मेरे मन की जानो नन्दलाला, अब राह दिखा जा रे।।
पिया मेरे मैं तोसे कहूँ, मेरा राम मिला जा रे।।

तोहे ढूँढूँ तो ढूँढूँ मैं कहाँ, मुझे अपनी ठौर बता जा रे।
कब से तड़पूँ मिलने को, अब अपना पता बता जा रे।।

थक गये हैं क़दम मेरे अब तो, तू ही पास बुला जा रे।
मैं जाऊँ चैना पाऊँ कहाँ, अब कुछ तो आ के बता जा रे।।

अब 'मैं' की रचना भूल करी, तुझमें ही मैं समा जाऊँ।
तुम ही कहो हे राम मेरे, मैं किस विध तुम तक आ जाऊँ।।

-परम पूज्य माँ
(प्रार्थना शास्त्र 2/365 - 30.4.1960)

आप श्री हरि माँ की सर्वव्याप्कता में ही सदा दर्शन करूँ व करती रहूँ-

आप श्री हरि माँ को कोटि कोटि
प्रणाम मेरा
आप ही की अपनी
पम्मी
25, 26 अगस्त 2019

श्याम भैय्या को राखी

प्रस्तुति - विष्णु प्रिया महता

पूज्य माँ के तथाकथित साधना काल में भगवान श्री राम तथा श्री कृष्ण के साथ हमें उनके मधुर सम्बन्ध के दर्शन होते है। समय समय पर बहे हुए विभिन्न प्रवाहों में जहाँ पूज्य माँ ने इनका एकत्व दर्शाया है, वहीं पर उनके अपने सम्बन्ध के दर्शन भी होते है। एक ओर भगवान राम जो इनके अपने प्रियतम और लक्ष्य हैं, वहीं दूसरी ओर श्याम हैं उनके भैय्या!

उन दिनों रक्षाबन्धन के अवसर पर पूज्य माँ अपने श्याम भैय्या की कलाई पर राखी बाँध कर अपने इस सम्बन्ध की पुष्टि करना कभी नहीं भूलते!

जग में राखी बाँधने पर भाई बहिनों को उपहार देते हैं, इसलिये अपने भैय्या श्याम से भी उनको उपहार की उम्मीद है, परन्तु वहाँ स्थूल वस्तु के लिये कोई स्थान नहीं। इन अलौकिक भैय्या से तो इन दैवी गुणों का श्रृंगार माँगा जा रहा है जो इनके प्रेमास्पद् भगवान राम को पसन्द है।

श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान ने तत्व ज्ञान का वास्तविक अर्थ बताते हुए 13/7 में कहा है-

अमानित्वमदम्भित्वमहिंमा क्षान्तिरार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः।।

अर्थात् - श्रेष्ठता के अभिमान का अभाव, दम्भाचरण का अभाव, किसी भी प्राणी को किसी प्रकार भी न सताना, क्षमा भाव, मन-वाणी आदि की सरलता, श्रद्धा भक्ति सहित गुरु की सेवा, बाहर-भीतर की शुद्धि, अन्तःकरण की स्थिरता और मन इन्द्रियों सहित शरीर का निग्रह।

निम्नलिखित प्रवाह में अपने श्याम भैय्या से इन्हीं गुणों की माँग की जा रही है!

मन में चाहना थी, दैवी सम्पद् पाने की।
दैवी सम्पद् पा के, राम के पास जाने की।।1।।

गोपाल राखी बाँधी थी, तुमको भैय्या कह के।
बहु प्रेम से बहु चाव से, बहिन के भाव में बह के।।2।।

जग में राखी जब बाँधी, भाईजन धन मुझे देते हैं।
तुमसे भी यह आस लिये, हम राखी बाँधे देते हैं।।3।।

पाँच रुपये ही दे दे मुझे, जो नाम धरूँ वह दे देना।
अमानित्वं अदम्भित्वं, अहिंसा क्षान्ति दे देना।।4।।

आर्जवम्- पाँच हो गये, पाकर धन्य हो जाऊँगी।
बहु धन लिये बहु प्रेम से, मैं राम को मिलने जाऊँगी।।5।।

बहिन की डोलिया उसके प्रियतम के घर भेजने के लिये दहेज भी तो भैय्या को ही एकत्रित करना है। सो, इसी लिये यह अनुनय विनय हो रही है श्याम से! गुणों के स्तर पर अपनी निर्धनता से पूर्णतया अवगत, बहिन प्रेम का धन पाने के लिये भी अपने भाई से ही याचना कर रही है -

इस बेरी जब आऊँ भैय्या, कुछ और भी धन दे देना।
बहु निर्धन बहिन तेरी, प्रेम धन भी दे देना।।6।।

तोरे पाँव पड़ूँ ओ भैय्या मेरे, मुझे पिया से तू मिला ही दे।
बहु धन है तुझपे श्याम मेरे, विवाह का साज सजा ही दे।।7।।

दहेज जो माँगूँ वह भी श्याम, मैंने तुमसों ही तो पाना है।
पर तुम भी भैय्या जानत हो, मेरा राम ही तो ठिकाना है।।8।।

देख श्याम कर जोड़े कहूँ, पुनः पुनः तव चरण पड़ूँ।
अनाथ के नाथ ओ श्याम मेरे, मैं तो तेरी शरण में हूँ।।9।।

भाई बहिन के अन्तरंग और मधुर सम्बन्ध का कैसा सजीव और मार्मिक दर्शन हो रहा है इन पंक्तियों में! अपने भाई से अपनी प्रेम व्यथा बाँटते हुए उनसे ही विनती हो रही है कि वह ही प्रियतम से मिलन करा दे! भैय्या के अथाह प्रेम के साथ साथ उनकी सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास के भी दर्शन होते हैं यहाँ!

मेरा कर थाम के, राम के कर में दे तू दो।
हंस कर भैय्या मुझे, राम को ही दे तू दो।।10।।

अब राम बिना जी न लगे, तुम कहो श्याम मैं क्या करूँ?
तड़प रहा है मन मेरा, बिन दर्शन के मैं मर न सकूँ।।11।।

जिनका कोई न हो जग में, वह तुमको ही तो बुलाते हैं।
मैंने सुना तव नाम ले, मन चाहे जिसे वह पाते हैं।।12।।

मैंने तुमको ही तो पाना है, मुझे राम सों ही मिला देना।
जिस धन से उसे मिल सकें, वह धन तुम ही दिला देना।।13।।

एक ओर जहाँ श्याम भैय्या से अमानित्वं, अदम्भित्वं की माँग की जा रही है, दूसरी और इसी प्रवाह में पूज्य माँ के अपने जीवन में उनका दर्शन भी हो रहा है। अपनी पूर्ण असमर्थता एवं निर्बलता स्वीकार करके केवल मात्र उन एक कृष्ण की ही शरणागत हैं।

मुझपे तो कुछ ज्ञान नहीं, कि जा के स्वयं मना लूँ में।
मुझे डर लागे कोई यत्न किये, तुमको ही ना गँवा लूँ में।।14।।

हे श्याम मेरे हे भैय्या मेरे, तेरी अबला बहिन रो है रही।
तेरे चरण में तड़प तड़प, वह प्रेम के आँसू पिरो रही।।15।।

विरह मुझे लागी है, हर पल जलती जाती हूँ।
बहु जन्म से जल रही, राखी भी हो नहीं पाती हूँ।।16।।

राम से मुझे मिला दो तुम, या आकर चिता जला देना।
दैवी धन माँगूँ तुमसे, वह भी तुम मुझे दिला देना।।17।।

गर धन पाऊँ तो स्वयं ही जाकर, राम की मैं हो जाऊँगी।
इक बेरी गर मिल पाऊँ, तो उसमें ही मैं समाऊँगी।।18।।

कर पकड़ के तुम मुझे ले चलो, या दैवी सम्पद् दे ही दो।
या राम को यहाँ पे ले आवो, मेरा कर वा कर दे ही दो।।19।।

प्रार्थना शास्त्र नं. 1/338 - 18.3.1960 ❖

अर्पणा समाचार पत्र

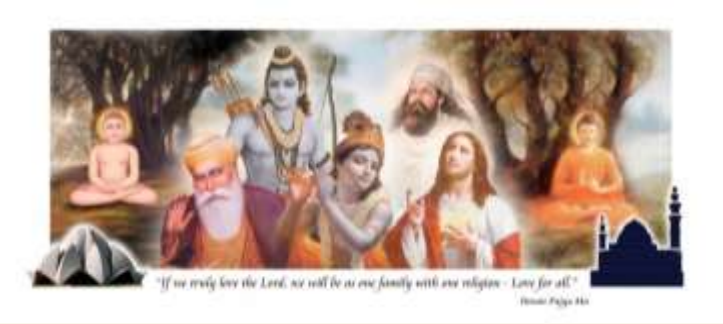

परम पूज्य माँ के शताब्दी वर्ष
का भव्य समारोह!

भगवान श्री कृष्ण का जन्म उत्सव भी..
व हमारे परम आराध्य,
परम पूज्य माँ की 100वीं वर्षगाँठ भी!

2024 का यह वर्ष, एक बहुत ही अतुलनीय वर्ष रहा.. और हो भी क्यों न! यह हमारे सदगुरु की 100वीं वर्षगाँठ जो है, जिसे हम जैसे भौतिक जीवों ने ही नहीं, अपितु भगवान ने भी स्वयं मनाया है।

अर्पणा का साधना दिवस 9 मार्च को मनाया जाता है और इस वर्ष उसी दिन महाशिवरात्रि भी थी। 16 अप्रैल, जो हमारे दिव्य सदगुरु का समाधि दिवस है- भगवान ने उस दिन राम नवमी का समारोह कर दिया.. 26 अगस्त, पूज्य माँ की इस 100वीं वर्षगाँठ के दिन पूज्य माँ के नटखट श्याम भैय्या, श्रीकृष्ण ने भी अपना जन्मदिवस मनाने की ठान ली। ऐसा प्रतीत होता है जैसे भगवान जी भी पूज्य माँ की इस दिव्यता को मना रहे हैं।

यह तो हमारा अहोभाग्य है कि उनके सान्निध्य में रह कर उनके जीवन के हर पहलू का अवलोकन करने का हमें सुअवसर मिला।

वह कहते हैं न-

धन्य धन्य वो भूमि, प्रभु ने लिया जहाँ अवतार
धन्य है वो स्थान, जहाँ पर प्रेम का हो प्रचार
धन्य हैं तीर्थ जिनकी यात्रा, मुक्ति की है बात..

बड़े ही हर्षोल्लास से हमने भगवान श्री कृष्ण के जन्मदिवस और परम पूज्य माँ की 100वीं वर्षगाँठ की जयंती मनाई।

भक्तजनों, परिवार के सदस्यों एवं मित्रों ने अर्पणा आश्रम में एकत्रित होकर अपनी दिव्य गुरु परम पूज्य माँ के प्रति समर्पण, श्रद्धापूर्वक प्रार्थना एवं धन्यवाद व्यक्त किया।

25 और 26 अगस्त को 'आशीर्वाद' परिसर में परम पूज्य माँ के स्वतः स्फुरित प्रवाह की दिव्य वाणी से भजनों की प्रस्तुति, गायन और नृत्य के रूप में की गई।

- सुश्री नितिशा नंदा एवं उनके सम्पूर्ण ओडिसी नृत्य दल ने भगवान श्री कृष्ण के चरणों में एवं पूज्य माँ की स्मृति में एक भक्तिरस से परिपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की जिसे देख कर दर्शकगण अत्यन्त भावुक एवं मंत्रमुग्ध हो गये।

- 26 अगस्त को इस खुशी के मौके पर हमारी अतीव प्रिय विनीता गुप्ता ने भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव व पूज्य माँ के प्रति अपने उत्कृष्ट गायन से श्रद्धांजलि दी।

- 25 अगस्त को श्री कृष्ण अरोड़ा के नेतृत्व में 'उर्वशी ललित कला अकादमी' के गायकों ने पूज्य माँ की दिव्य वाणी को सुमधुर स्वर में गाया - जिससे पूज्य माँ के समाधि स्थल, 'आशीर्वाद' का परिसर दिव्य भक्ति रस से गूँज उठा।

पूज्य माँ की मधुर स्मृति में..

25 अगस्त को, अर्पणा आश्रम के परिसर में एवं परम पूज्य माँ के समाधि स्थल, 'आशीर्वाद' परिसर में दो वृक्ष लगाये गये। 'तबेबुइया रोज़ा' नाम के यह वृक्ष गुलाबी रंग के फूलों से भर जाते हैं जिससे वातावरण की दिव्यता और भी खुशनुमा हो जायेगी।

अर्पणा अस्पताल

आपातकालीन विभाग का उद्घाटन

अर्पणा अस्पताल के आपातकालीन विभाग का उद्घाटन 15 जुलाई, 2024 को हुआ, जिसका उद्देश्य समुदाय को उन्नत चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना है।

घरौंडा के माननीय विधायक, श्री हरविंदर कल्याण द्वारा आपातकालीन विभाग का उद्घाटन किया गया।

अर्पणा अस्पताल का यह विभाग, इस क्षेत्र में उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच और गुणवत्ता में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अर्पणा अस्पताल के चिकित्सा निर्देशक, डॉ. आर. आई. सिंह ने स्पष्ट किया कि इस विभाग के उद्घाटन से सभी मरीज़ों को शीघ्र और कुशल उपचार मिल सकेगा।

उद्घाटन समारोह में अर्पणा के सम्मानित ट्रस्टी भी सम्मिलित हुए, जिनमें हरीश्वर दयाल (कार्यकारी निदेशक), आभा भंडारी, अरुणा दयाल, रविंदर दयाल और उनकी पत्नी प्रिया दयाल सम्मिलित थे।

अर्पणा के आध्यात्मिक प्रकाश-स्तंभ और मार्गदर्शक, परम पूज्य माँ के निर्देशों के अनुसार, सभी को करुणामय स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के अपने मिशन के प्रति अर्पणा अस्पताल प्रतिबद्ध है।

जीवन बीमा निगम द्वारा अर्पणा अस्पताल को ईको (ECO) मशीन प्रदान की गई

एलआईसी ने उदारतापूर्वक अर्पणा अस्पताल को एक अत्याधुनिक ईको (ECO) अल्ट्रासाउंड मशीन प्रदान की है। यह उन्नत डायग्नोस्टिक उपकरण अस्पताल की सटीक, चिकित्सा आकलन प्रदान करने की क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाएगा, विशेष रूप से आपातकालीन और गंभीर परिस्थितियों में..

अर्पणा अस्पताल, रोगियों की स्वास्थ्य देखभाल के समर्थन एवं जरूरतमंद रोगियों को लाभ पहुँचाने में अर्पणा को सक्षम करने के लिए जीवन बीमा निगम का आभारी है।

हरियाणा सशक्तिकरण कार्यक्रम

एसएचजी नेताओं के लिए मोबाइल प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण

मार्च 2024 से, श्री ईश भटनागर और उनकी टीम एसएचजी नेताओं को मोबाइल प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण दे रही है। स्मार्टफोन वाली 1,000 एसएचजी महिलाओं की एक टेलीफ़ोन डायरेक्टरी बनाई गई। एसएचजी नियमों पर चर्चा करने और समूह की समस्याओं को हल करने के लिए कई ज़ूम मीटिंग आयोजित की गईं। जुलाई 2024 तक, 400 महिलाओं ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

उन्हें सिखाया गया:

- फ़ोटो और वीडियो को भेजना
- संदेश संपादित करना,
- वर्तमान और लाइव लोकेशन भेजना
- गूगल ऐप का उपयोग करना
- कार्यक्रम को मजबूत करने और बनाए रखने के लिए व्हाट्सएप और ज़ूम पर मीटिंग आयोजित करना

अर्पणा, श्री रविन्द्र बहल और बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रति बहुत आभारी हैं, जिन्होंने अर्पणा के हरियाणा विकास कार्यक्रमों को सहयोग दिया।

दिल्ली शिक्षा कार्यक्रम

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया लेडीज क्लब ने अर्पणा एजुकेशन सेंटर को सहयोग दिया

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की लेडीज क्लब ने 3 मई को एक चैरिटी कार्यक्रम में सीसीटीवी कैमरे और फर्नीचर खरीदने के लिए अर्पणा को 40,000 रुपये दान किये।

अर्पणा एजुकेशन सेंटर, नई दिल्ली की उपाध्यक्ष श्रीमती बानी राजगढ़िया ने यह योगदान प्राप्त किया, जिससे अर्पणा द्वारा समुदाय की अधिक प्रभावी ढंग से सेवा की जा सकेगी।

ETASHA ने अर्पणा के वरिष्ठ छात्रों के लिए करियर काउंसलिंग आयोजित की

ETASHA, जो करियर काउंसलिंग के लिए एक गैर सरकारी संगठन है, ने 10वीं-12वीं कक्षा के 152 अर्पणा छात्रों को करियर संबंधी निर्णय लेने में मदद की। 11 जून को 4 स्लॉट में ऑनलाइन ओरिएंटेशन सत्र आयोजित किए गए। अर्पणा ट्रस्ट में 12-13 जून को चार करियर मार्गदर्शन कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।

अर्पणा ट्रस्ट में आयोजित ऑनलाइन भाषा प्रशिक्षण कक्षाएँ

नई दिल्ली स्थित इनलिंगुआ के एम.डी. श्री विक्रम बजाज ने इसमें रुचि रखने वाले 37 छात्रों को उदारतापूर्वक निःशुल्क स्पोकन इंग्लिश कक्षाएँ प्रदान कीं। इस कार्यक्रम में अर्पणा की कंप्यूटर लैब से दैनिक ऑनलाइन कक्षाएँ और इनलिंगुआ के साउथ-एक्स सेंटर में साप्ताहिक ऑफ़लाइन सत्र शामिल हैं।

वसंत विहार में अर्पणा के ज्ञान आरंभ कार्यक्रम में समर कैंप की गतिविधियाँ

- भाषा कौशल को बढ़ाने के लिए कहानी सुनाना
- पढ़ने में सुधार के लिए लाइब्रेरी का उपयोग
- व्यावहारिक प्रयोग करके विज्ञान को बढ़ावा देना
- रचनात्मकता के लिए कला, शिल्प और खेल
- स्किट और ड्रामा द्वारा आत्मविश्वास में बढ़ावा
- आत्मनिर्भरता के लिए बिना आग के खाना पकाना

अर्पणा, श्री एस.एम. शिवदासानी (ओमान), अर्पणा कनाडा, आईडीआरएफ (यूएसए), केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रन (यूएसए) और बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रति बहुत आभारी है, जिन्होंने अर्पणा के शिक्षा कार्यक्रमों में भरपूर समर्थन दिया।

हिमाचल प्रदेश कार्यक्रम

हिमाचल में अर्पणा द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

अर्पणा ने हिमाचल के सबसे दुर्गम क्षेत्रों में से एक, जटकरी पंचायत में 141 रोगियों के लिए पहला नि:शुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किया। डॉ. मोंगोत्रा, एमबीबीएस, ने 16 जून को लांघा गाँव के वन विश्राम गृह में शिविर का आयोजन किया। स्वास्थ्य सेवा तक कम पहुँच के कारण व कई लोग संसाधनों की कमी के कारण वर्षों तक चुपचाप पीड़ा सहन करते रहते हैं। उपचार तक पहुँच के बिना बीमारियों से जूझ रहे लोग, इस प्रकार प्रदान की गई सहायता के लिए बहुत आभारी हैं।

बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट का सहयोग बहुत सराहनीय है, जिससे यह शिविर संभव हुआ। इस सहायता के लिये अर्पणा अत्यन्त आभारी है।

स्वयं सहायता समूहों के लिए अभिलेख प्रशिक्षण

जुलाई में अर्पणा ने 81 स्वयं सहायता समूहों की 196 महिलाओं के लिए चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, ताकि महिलाओं को समूह अभिलेख स्वयं भरने में सक्षम बनाया जा सके।

एसएचजी महिला ने अपने साथियों को
ब्याज की गणना करने का तरीका बताया

अर्पणा, हिमाचल प्रदेश में अर्पणा के कार्यक्रमों को समर्थन देने के लिए श्री रविन्द्र बहल और बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रति बहुत आभारी है।

EMPOWER VULNERABLE WOMEN AND CHILDREN AS THEY REACH FOR THEIR DREAMS!

ARPANA TRUST
EDUCATION FOR DISADVANTAGED CHILDREN
- Tuition support for classes 1-12 pre-school Classes for toddlers, cultural activities.
- Vocational training classes.

HUMANE VALUES FOR AN EQUITABLE SOCIETY
- Dramas, Publication, Satsangs
- Charitable grants for the vulnerable
- Health/Socio economic assistance

DONATE ONLINE

ARPANA RESEARCH & CHARITIES TRUST
PROVIDES MODERN HEALTH CARE THROUGH
- Arpana Hospital for free /affordable health care.
- Arpana Medical centre, Himachal

EMPOWERING WOMEN
- Self Help Group & SHG Federations.
- Micro – Credit, Income generation, community development

EMPOWERING THE DIFFERENTLY ABLED
- Differently Abled Persons Organizations for health, assistive devices, certifications and income generation.

DONATE ONLINE

DONATIONS TO ARPANA ARE 50% TAX EXEMPT UNDER SECTION 80G, INCOME TAX ACT 1961

Cheques in favour of Arpana Trust to be sent to:
Information & Resources Department
Arpana, Madhuban, Karnal- 132037, Haryana
Email: arct@arpana.org | at@arpana.org

Donations through Direct Bank Remittance:
Bank of India, Karnal (IFSC Code: BKID0006750)
Arpana Research & Charities Trust; Bank Account No. 675010100100014,
Arpana Trust Bank Account No. 675010100100001

FOREIGN DONATIONS TO ARPANA TRUST ARE 100% TAX EXEMPT WHEN SENT THROUGH:

Arpana Canada
Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton,
Ontario L6Y 359 Canada
Email: suebhanot@rogers.com

India Development & Relief Fund (IDRF)
Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive,
North Bethesda, MD 20852 USA
E mail: vinod@idrf.org

Contact Us: Harishwar Dayal, Executive Director +91 98186 00644
Aruna Dayal, Director Development +91 99916 87310

Email us: arct@arpana.org | at@arpana.org
Websites www.arpana.org www.arpanaservices.org